Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

मुगलकाल में सांस्कृतिक जीवन, मनोरंजन, त्यौहार एवं शिक्षा

Ravinder Kumar[1]* Dr. Birbal[2]

[1] Research Scholar

[2] Associate Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

***सारांश** – मनोरंजन सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधनों एवं समय समय पर मनाये जाने वाले त्यौहारों की दृष्टि से मुगलकाल को आनन्द व खुशी का काल कहा जा सकता है। इस काल के मनोरंजन के साधनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इनमें से अनेक युग की प्रवृत्तियों के अनुरूप अपने स्वरूप में सैनिक व साहसिक गुणों से प्रभावित लगते हैं। ऐसे मनोरंजनों में चौगान, घुड़दौड़, शिकार, पशु या पक्षियों की लड़ाई आदि प्रमुख है जिनका सम्बन्ध मुख्यतः अभिजात वर्ग से था। कुछ अन्य यथा चौपड़, ताश, कबूतर व पतंग उड़ाना, कुश्ती आदि का सम्बंध समाज के धनी, निर्धन सभी वर्गों से था। समाज में विशेषकर उच्च वर्ग में समृद्धि का प्राचुर्य वैभव विलास, विभिन्न प्रकार के मनोरंजन और क्रियाएं विद्यमान थी। सम्पन्न वर्गों में शान–शौकत की अधिकता थी और उसी के अनुरूप अनेक मनोरंजन के साधनों का प्रचलन हो गया था। इस तरह सभी सुख सुविधाओं से युक्त प्रासादों में दास–दासियाँ सदैव सेवा के लिए तत्पर रहती थी।*

----------X----------

प्रस्तावना

मनोविनोद के लिए नट–नर्तक क्रीड़ाएं, विहार और विभिन्न रंगस्थलियों की कमी नहीं थी। केशव ने *वीरसिंहदेव चरित* में दिल्ली के सुल्तान के विनोद के साधनों का वर्णन दिया है प्रायः यह सामग्री सुल्तान से लेकर छोटे सरदार, सामन्त, रईस सभी को सुलभ थी। इन साधनों में हाथी घोड़े, मणी, गुणी, गायक, सुन्दरी, कलावन्त, आदि की गणना की गई है।

जहांगीर जगती को इन्द्र, देख्यों विरसिंह देव नरिंद।

कर जोरे सेवत, दिगपाल। विद्याधर, गंधर्व रसाल।।

सोभत है गजराज चरित्र। ढारत चँवर कलानिधि मित्र।

सकल मंजुघोषा सुन्दरी, गावति सुखद सुके''ी खरी।।[43]

मनोरंजन के इन साधनों में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। केशव के वर्णन से स्पष्ट होता है कि दुःख व निराशा से मुक्ति हेतु वीणा वादन मनोरंजन का एक साधन था।

जब–जब धरि बीना प्रकट प्रबीना बहु गुनलीना सुख सीता।

पिय जियंहि रिझावै दुखनि भजावै बिबिध बजावै गुनगीता। [44]

संगीत के लिए तरह–तरह के वाद्य–यन्त्रों का उपयोग किया जाता था जिनमें, *मृदंग, ढोल, झांझ, डफ* और *बीन* आदि होते थे।

एक नृत्यत एक गावत मिलि परस्पर बोल।

जब हौं सुन्यों झिंझ, डफ बाजत बीना ताल मृदंग।

x x x x

रति ताल मदन मृदंग बाजत दुन्द दुंदुभि ढोल ।[45]

कवि बनारसी दास ने आगरे के एक साहूकार द्वारा जो बहुत धनी था उसके घर पर गायकों द्वारा *पखावज* (मृदंग एक तरह का ढोलक के आकार का उपकरण) एवं वीणा बजाने का उल्लेख किया गया है।

बैठे साहू विभो मंदमति। गांवहि गीत कलावंत पांति।

धुरै पखावज बाजैं तांति। सभा साहिबजादे की भांति।[46]

इस तरह संगीत राजघरानों में आमोद–प्रमोद के महत्वपूर्ण साधन था। औरंगजेब ने इस पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया। उसके बाद भी संगीत निरन्तर जारी रहा विलासी अमीर उमरा अपने हरम में बड़ी संख्या में नर्तकियां रखते थे और

[43] केशव, *वीरचरित्र,* 11वां प्रभाग, चौपाई 24–25, पृ0 522
[44] केशव, *रामचन्द्रिका,* 11वां प्रभाग, दोहा 27, पृ0 182
[45] सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली,* भाग–दो, दोहा 182, 178, पृ0 1075–1072
[46] बनारसीदास, *अर्धकथानक,* चौपाई, 558, 59, पृ0 62

www.ignited.in

संगीत समारोंहों का आयोजन करते थे।[47] पदमाकर की नायिका चित्रशाला और नाट्यशाला, छज्जों, झरोकों में मनोरंजन करती थी।

छज्जा छज्जा झांकती झरोखनि झरोखनि है

चित्रसारी चित्रसारी चंद सम वै रही

x x x x

आवत कंत उछाह भरे अवलोकिबै कौ निज नाटक''ाला।

हौं नचि गाई रिझावहुगीं पदमाकर त्यों रूचि रूप रसाला।[48]

इसके साथ–साथ कुछ आयोजित मनोरंजन जिनमें नट, बाजीगरों के तमाशों, बन्दर का नाच और सपेरों के खेल आदि होते थे। इन तमाशों के साथ सारंगी, ढोल, तबला, मंजीरा आदि बजते रहते थे।

नटवट रच्यौ नटवै एक, बहु प्रकार बनाए बाजी कियो रूप अनेक

x x x x

के कै कला अनेक नटवा चढ़ि बांस फैला खतरातन तोड़त

ढोलियां यों कहै हों न बदों इत आपु दिवैयन के कनफोरत [49]

सुन्दरदास व्यक्ति के कामिनि (वासना का रूप) के प्रभाव में होने की उपमा ऐसे बन्दर से करता है जिसे मदारी नचाता है और सपेरा सांप को पिटारे से बाहर निकालता है।

जब सर्प सुन्यौ बहु नादा कहै श्रवनहु पायौ स्वादा ।

जब बहुर लगी खेला तब पकड़ पिटारी मेला

x x x x

जीवन माहि कामरस लुबधि, कामिनि हाथ बिकायो रे ।

जैसे बाजीगर को बनरा, घर–घर नाच नचायौ रे ।। [50]

घर से बाहर खेले जाने वाले खेलों में चौगान अभिजात वर्ग का खेल था। केशव ने राम के चौगान खेल का वर्णन किया है यह खेल आज के पोलों की भांति खेला जाता था जिसकी परिधि एक कोस तथा भूमि सममतल होती थी। रामचन्द्र जब चौगान खेलने के लिए जाते थे उनके साथ–साथ नौकर, प्यादे और अन्य लोग भी होते थे।

एक काल आतिरूप विधान, खेलन को निकले चौगान ।

हाथ धनुष सर मन्मथ रूप । संग प्यादे सोदर भूप ।

याहि विधि गए राम चौगान । सावकास सब भूमि समान,

सोभन एक कोस परिमान, रूचि रूचिर तापर चौगान ।।

x x x x

खेलन को लागे कुंवर सब चतुर चारू चौगान ।। [51]

सुन्दरदास ने कर्मों के वश धक्के खाते व्यक्ति की तुलना आखिर रहने वाले चौगान की गेंद (कदुंक) से की है और बिहारी ने प्रेम का रूपक चौगान के साथ बांधा है। चित रूपी घोड़े के साथ प्रेम रूप चौगान के खेल को जीतना चाहिए।

थिरता न लहै जैसें कदुंक चौगान माहि ।

कर्मनि के बसि मारयौ को धक्का बहुत है ।।

x x x x

सरस सुमिल चित तुरगँ की करि करि अमिट उठान ।

गोई निवाहै खेलि प्रेम चौगान ।[52]

सर्वसाधारण में पतंग उड़ाने का प्रचलन था। प्रमी जहां मनोरंजन के लिए पतंग उड़ाया करते थे वहीं प्रेमिकाएं इसे देखकर मनोरंजन करती थी ।

उड़ति गुडी लखि लाल की अंगना अंगना मांह ।

बौरी लौं दोड़ी फिरती छुवति छबिलि छाँह ।।

x x x x

कहा भयो जो बिछुरे तो मन मो मन साथ ।

उडि जाति कित हुँ गुडी तऊ उडायक हाथ ।। [53]

मुगल काल में सम्राट और उच्च वर्गों के लोगों का शिकार मनोरंजन के लिए सबसे लोकप्रिय साधन था।[54] तत्कालीन काव्य में भी इसके संदर्भ मिलते हैं। केशव ने जुर्रा, बहरी, बाज तथा श्वान (कुत्ता) की सहायता से वानर, बाघ, वराह, मृग आदि पशुओं के साथ कपोत, तीतर, पिक, केकी, केक, कुररी, सिंह और शूकर (सूअर) के शिकार की चर्चा की है ।

जुररा बहरी, बाज बहु चीते, स्वान सयान ।

सहर बहेलिया, मिलजुल नीज निचोल, विधान ।।

बानर, बाघ, वराह, मृग, सीनादिन बहु जंत ।

---

47 मायावती भण्डारी, *उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, 1658–1719,* पृ0 41, अली मुहम्मद खान, *मीराते अहमदी,* अंग्रेजी अनुवाद, एम०एफ० लोखण्डवाला, पृ0 71, मुहम्मद उमर, *मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी,* पृ0 102

48 पदमाकर, *जगदविनोद,* दोहा 567, 268, पृ0 77, 38

49 सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली, भाग–2,* पृ0 1052, वोधा, *विरहवारीश,* दोहा 49, पृ0 111

50 सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली, भाग 1 पृ0 144, वही भाग–2,* पृ0 1063, दोहा 21, 161, 12, 14 पृ0 131, 1063, 144, बर्नियर ने उल्लेख दिया है कि बाजीगर कई तरह से लोगों का मनोरंजन करते थे, देखिए फ्रैंक्विस बर्नियर, *ट्रैवल्स इन द मुगल इम्पायर,* पृ0 109, पी.एन. चोपड़ा, *सम आसपैक्ट आफ सोशल लाइफ डयूरिंग द मुगल ऐज 1526–1707,* पृ0 77

51 केशव, *रामचन्द्रिका,* 29वां प्रभाग, छन्द 14, पृ0 371, वही, *विरचरित्र,* 19 वां प्रभाग, दोहा 9,
पृ0 559, पोलो व चौगान के लिए देखिए, मुहम्मद उमर, *मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी,* पृ0 102

52 सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली,* भाग–2,, पृ0 786, बिहारी, *बिहारीरत्नाकर,* दोहा 178, पृ0 90

53 बिहारी, *बिहारीरत्नाकर,* दोहा, 373, 57, पृ0 153, 130

54 जे.एन. सरकार, *हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब,* भाग–3, दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 1972, पृ0 9

www.ignited.in

वध बंधन बेधन, बरनि मृगया खेल अनंत ।।

तीतर, कपोत, पिक केकी कोक पारावत ।

कूकर पास सक सूकर गहाए है ।

मकर निकट, वेधि वांछि गजराज मृग ।।[55]

बादशाह अकबर भी शेरों, चीतों, हाथियों, हिरणों, जगली गधों, मुर्गाबियों, कुत्तों के शिकार का बड़ा प्रेमी था। इस उद्देश्य के लिए उसने चारों तरफ से घिरी जगह जिसे *'कमरधा'* कहा जाता था में बड़ी रूचि रखता था।[56] मनूची ने भैसों, हाथियों की मदद से शाहजहां द्वारा चीते के शिकार का ब्योरेवार वर्णन दिया है।[57] बर्नियर ने बड़े–बड़े सरदारों और कभी–कभी जन साधारण के साथ शेरों, तेंदुओं, हिरणों, नीलगायों, घूसर रंग के सांडों और अन्य जंगली जानवरों के शिकार में बादशाह की दिलचस्पी का वर्णन दिया है[58] इस खर्चीले मनोरंजन का उपयोग साधारतः सामान्य जन नहीं करते थे।

इसके अलावा घर में खेले जाने वाले खेलों में *शतरंज, चौपड़, बिसात* और *जुआ* आदि खेलों का भी प्रचलन था। स्त्रियाँ भी शतरंज के खेल द्वारा मनोरंजन करती थी।

खेजत ही शतरंज आलिनि में आपहिते ।

तहां हरि आए कियौ काहू के बुलाय री । [59]

शतरंज के खेल की शुरूआत भारत से ही हुई मानी जाती है।[60]

चौसर या चौपड़ जिसमें पासे, हाथी दांत की सोलह गोटी, रंगीन विसात, गोट गिन कर चलने, हार जीत, गोट पिटने आदि के उल्लेख तत्कालीन साहित्य में मिलते हैं ।

चल चित बाजी हारियै जतन करै सौ लाखु।

सेनापति जब जितिये मन मुंह रामैं राखु ।। [61]

x x x x

दोऊ जने मिलि चौपर खेलत सारि ढरै पुनि ढारत पासा

जीतत है सु सुखी मन में हारति है सु भरे उसासा ।[62]

दरबारों में भी यह विशेष रूप से खेला जाता था। औरंगजेब की बेटी जेबुनिशा अपनी सहेलियों के साथ अधिकांश समय चौसर खेलने में व्यतीत करती थी।[63] जुआ भारतीय परम्परा में प्रचीन खेल माना जाता है। अकबर भी इसमें रूचि लेता था[64]।

पासा सारि खेलि कित कौन मनुहारिन

सोंजित मन हारि हारि आए हों। [65]

पदमाकर ने भी जुआ खेलने की चर्चा की है लेकिन सन्त सुन्दरदास जुआ को एक बुराई के रूप में उल्लेख किया है ।

जूवा जूवा मत बषासे जुई जुई माल

देखि सुन्दर भय चकित सब ठगे से लाल। [66]

महिलाएं भी जुआ खेलती थी जिसका उल्लेख के''ाव ने 'रसिकप्रिया' के माध्यम से दिया है ।

आजु देवारि की राति जौ कीजै तो आजु के धोस लौ ह्वै है सभागी

दीप दै देवनि जाई जुवा मिलि 'केशवराई' सौ खेलन लागी। [67]

बड़ों के साथ–साथ बालकों के भी मनोंरंजन के साधन जैसे, फिरकी, गुल्ली डण्डा, गोली, ठिकरी छुपाना, बन्दर किला, कोडा चौपाकी प्रचलित थे।[68] सुन्दरदास और बिहारी ने बालकों के खेल जैसे लकड़ी का घोड़ा, फिरकी आदि का उल्लेख किया है।

ज्यौं लकड़ी के अश्व चढ़ कूदत डौले बाल ।

x x x x

नई लगनि कुल की सकुच विकल भई अकुलाई

दुंह और ऐथी फिरति, फिरकि लौ दिन जाई।। [69]

कबूतरबाजी (इश्कबाजी) के नाम से जानी जाने वाली कबूतरों की उड़ान में सभी अमीर–गरीब दिलचस्पी लेते थे । कवि बिहारी ने भी कबूतरबाजी का उल्लेख किया है।

ऊँचे चितै सराहियते, गिरह कबूतर लेतु। [70]

बदशाह अकबर का भी यह खास मनोरंजन था । शाही दरबार में 20 हजार से ज्यादा कबूतर थे जिनमें पाँच सौ खास कबूतर थे जिनमें से अधिकतर ईरान, तूरान से मंगवाए गए थे [71] इन

---

55 केशव, *कविप्रिया*,, 8 वां प्रभाग, पृ0 144, 45, पैल्सर्ट ने आगरे के समीप रूपवास में जहांगीर द्वारा सूअर, बाघ, शेर, मृग का शिकार का वर्णन दिया है । देखिए, पैल्सर्ट, *जहांगीरज़ इण्डिया*, पृ0 51–52

56 *कमरधा* (चारों तरफ से घिरी जगह) जिसमें जन साधारण भी भाग लेते थे । देखिए, पी.एन.ओझा, *मुगकालीन भारत का सामाजिक जीवन*, पृ0 48, पी.एन. चोपड़ा, *सम आसपैक्ट आफ सोशल लाइफ ड्यूरिंग द मुगल ऐज 1526–1707*, पृ0 69

57 मनूची, भाग 1, पृ0 191, 92

58 फ्रैंक्विस बर्नियर, *ट्रैवल्स इन द मुगल इम्पायर*, पृ0 376, 77, 78

59 केशव, *कविप्रिया*, 12वां प्रभाग, दोहा 30, पृ0 181, मायावती लिखती हैं कि शतरंज एक फारसी शब्द है, जो चौंसठ खानों की बिसात पर 32 मोहरों से खेला जाता था । देखिए, मायावती भण्डारी, *उत्तरी भारत में हिन्दू समाज 1658–1719*, पृ0 39

60 के.एम. अशरफ, *हिन्दूस्तान के निवासियों का जीवन और परिस्थितियां*, पृ0 241, अमीर खुसरो, नूहे सिपेहर, हिन्दी अनुवाद, एस.ए.ए. रिजवी, *खलजी कालीन भारत*, नई दिल्ली, 2008, पृ0 179

61 सेनापति, *कवित्तरत्नाकर*, पूर्वोक्त, कवित 10, पृ0 121, उच्च वर्गों में चौपड़, पतंगबाजी, कबूतरबाजी के लिए देखिए, मुहम्मद उमर, *मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया ड्यूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी,, पृ0 411*

62 सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली*, भाग–2, दोहा 30, पृ0 942

63 मायावती भण्डारी, *उत्तरी भारत में हिन्दू समाज 1658–1719*, पृ0 40

64 जहांगीर, *जहांगीरनामा*, हिन्दी अनुवाद, ब्रजरत्नदास, पृ0 92

65 पदमाकर, *जगदविनोद*, दोहा 169, पृ0 24

66 सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली, भाग–2*, दोहा 158, पृ0 1062

67 केशव, *रसिकप्रिया*, तेरहवां प्रभाग, दोहा 10, पृ0 77

68 बी.एस. निज्जर, *पंजाब अण्डर द लेटर मुगल्ज़ 1707–1759*, पृ0 273, 74, 75, मायावती भण्डारी, *उत्तरी भारत में हिन्दू समाज 1658–1719*, पृ0 39

69 सुन्दरदास, *सुन्दरग्रन्थावली, भाग–2*, पृ0 733, बिहारी, *बिहारीरत्नाकर*, दोहा, 205, पृ0 87

70 बिहारी, *बिहारीरत्नाकर*, दोहा 374, पृ0 154

71 अबुल फजल, *आइने अकबरी*, भाग–1, पृ0 310

कबूतरों का उपयोग एक स्थान से दूसरे स्थान संवाद भेजने के लिए भी किया जाता था।[72]

जानवरों की लड़ाइयाँ – उस समय मनोरंजन का माध्यम विभिन्न प्रकार के जानवरों की लड़ाइयां थी। क्योंकि निम्न वर्ग हाथी, शेर, तेन्दुए, बाघ रखने की स्थिति में नहीं थे इसलिए वे बकरों, भेड़ो, बारहसिंगों, कुत्तों, चिड़ियों, आदि को लड़ाते थे जबकि मुगल सम्राट और उसके अमीर उमरा हाथी, शेर, हिरन, चीते, सुअर, सांढ, तेंदुए और अन्य खूंखार जानवरों की लड़ाईयां करवाते थे।[73] केशव ने भी पशुओं की लड़ाईयों और प्रदर्शन द्वारा मनोरंजन की चर्चा की है। इन पशुओं में प्रमुखतः बैल, भैंसा, मृग (हिरण), भेड़ा, बकरा, हाथी आति होते थे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

फारसी स्त्रोत

अबू अलरेहान मुहम्मद : किताबुल हिन्द, अंग्रेजी अनुवाद, अनुवादक सन्तराम, जयपुर, 1994

इब्न अहमद अल्बेरूनी : एडवर्ड सचाऊ, अल्बेरूनीज़ इण्डिया, भाग–1,2, पुर्नमुद्रित, नई दिल्ली, 1973

अब्दुल हमीद लाहौरी : बादशाहनामा, अंग्रेजी अनुवाद, एच.एम. इलियट एण्ड जॉन डाऊसन, हिस्ट्री आफ इण्डिया, भाग–7, एज टोल्ड बाइ इट्स ऑन हिस्टोरियनज़, पुर्नमुद्रित 2008, लो प्राइस पब्लिकेशन, दिल्ली

अली मुहम्मद खान : मीराते–ए–अहमदी, अंग्रेजी अनुवाद, एम०एफ० लोखण्डवाला, ओरियण्टल इन्सटीटयूट, बरोदा, 1965

अमीर खुसरो : नूह सिपेहर, हिन्दी अनुवाद, सैयद अतहर, अब्बास रिजवी, खलजीकालीन भारत, (1290–1320), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

....., : देवलरानी खिज्रखां, हिन्दी अनुवाद, सैयद अतहर, अब्बास रिजवी, खलजीकालीन भारत, (1290–1320), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

अबुल फजल : आईने–अकबरी, भाग 1, अंग्रेजी अनुवाद, एच० ब्लाचमैन, नई दिल्ली, 2001 भाग–2,3, अंग्रेजी अनुवाद, एच. एस. जौरट, (रिवाइज्ड), नई दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 2001

....., : अकबरनामा, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद, ए०एस० बेवरीज, दिल्ली, 1972

Corresponding Author

Ravinder Kumar*

Research Scholar

[72] मनूची, भाग–1, पृ0 65, पी.एन.चोपड़ा, *सम आसपैक्ट आफ सोशल लाइफ डयूरिंग द मुगल ऐज 1526–1707*, पृ0 76

[73] पैल्सर्ट, *जहांगीरज़ इण्डिया*, पृ0 74, फ्रैंक्विस बर्नियर, *ट्रैवल्स इन द मुगल इम्पायर*, पृ0 277–78 मायावती भण्डारी, *उत्तरी भारत में हिन्दू समाज 1658–1719*, पृ0 43, मुहम्मद उमर, *मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी*, पृ0 411–12